हिन्दी कहानियों के माध्यम से वर्तमान समाज एवं बदलते दाम्पत्य सम्बन्ध

अभयवीर
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
कमला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
धौलपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

परिवर्तन संसार का नियम है प्राचीन समाज एवं वर्तमान समाज के विविध आयामों में आज तीव्र गति से परिवर्तन हुआ है जिसके कारण दाम्पत्य सम्बन्धों का रूप रूढ़ियों से हटकर पाश्चात्य सभ्यता की ओर अग्रसर हो रहा है बदलते दाम्पत्य सम्बन्धों को लेकर हिन्दी कहानीकरों में सूर्यवाला, मन्नू भण्डारी, ऊषा प्रियम्वदा, मेहरून्निसा परिवेस ने भारतीय नारी के दाम्पत्य जीवन का उद्‌घाटन विविध आयामों को लेकर किया है। भारतीय संस्कृति के सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास वर्तमान में बखूवी देखने को मिल रहा है। आर्थिक स्तर के बढने से आज दाम्पत्य सम्बन्ध स्थिरता के रूप को खोता जा रहा है। जिसके कारण बढते तलाक परिवारों का विघटन करने में अपनी अहम् भूमिका के रूप में नजर आता है । आज के आधुनिक परिवेश में ऐसा समय है जहाँ सभी खुलकर जीने की सोचते हैं और स्वतंत्रता पूर्वक जीना चाहते हैं जबकि अपेक्षा ऐसा करते हैं कि परिवार एवं समाज हमारा साथ दे।

मुख्य शब्द : वर्तमान समाज, पुरातन नारी, आधुनिक नारी, वर्तमान पुरूष की मानसिकता, आधुनिक कहानियों में स्त्री–पुरूष सम्बन्ध।

प्रस्तावना

वर्तमान समाज एवं बदलने दाम्पत्य सम्बन्ध :– समाज में हमेंशा से गरीब और अमीर जैसे दो वर्ग रहे हैं ठीक वैसे ही स्त्री और पुरूष के बीच एक बड़ी खाई रही है पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों को पुरातन समय से ही स्वतंत्रता न्यून रही है लेकिन वर्तमान परिवेश में स्त्रियाँ पूर्ण स्वतंत्रता के साथ जीवन जीने के लिए संघर्षरत है जिसका परिणाम दाम्पत्य सम्बन्धों में टकरार पैदा करता जा रहा है। स्त्री की बढती शिक्षा एवं बढते आर्थिक स्तर ने स्त्री स्वतंत्रता की राह खोलकर रख दी हैं आज एक ऐसे समाज की आवश्यकता है जिससे भारतीय दाम्पत्य सम्बन्ध सम्पूर्ण विश्व के लिए एक उदाहरण बन सके और एक नए विश्व की कल्पना का रूप साकार हो सके।

अध्ययन का उद्‌देश्य

1. वर्तमान समाज में स्त्री–पुरूष सम्बन्धों को वर्णित करना।
2. पुरातन समाज और नव परिवर्तित समाज का तुलनात्मक अध्ययन।
3. आधुनिक कहानियों के माध्यम से दाम्पत्य सम्बन्धों के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, परिवर्तनों को वर्णित करना।
4. नारी शिक्षा के बढ़ते स्तर, तकनीकी क्षेत्रों में बढ़ते पायदान का दाम्पत्य सम्बन्धों पर प्रभाव को वर्णित करना।

विषय विस्तार

प्राचीन काल में नारी हर प्रकार से सम्मान था आधुनिक काल और उत्तर वैदिक काल को जानने से पता चलता है नारी अस्मिता के मूल्यों में निरन्तर गिरावट आई बौद्ध काल में भी नारी मात्र भोग्या मात्र ही समझी जाने लगी अतः समाज में नारी को एक उपयोग की बस्तु बनाकर रख दिया इस असीम पीड़ा को आखिर नारी कब तक सहन करती परन्तु आधुनिक काल में स्त्रीवादी आंदोलन एक बड़ा रूप लेता जा रहा है जो कि स्त्री का दायरा घर की चारदीवारी तक कैद या आधुनिक समय में शिक्षा के बढते स्तर ने नारी अस्मिता को जगाकर रख दिया आज की नारी अपने अधिकारों के प्रति सजग व सचेत रहना चाहती है। आज की नारी पुरूष के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की ओर हर काम पूर्ण मनोयोग से करने का हौसला रखती है।

नारी शिक्षा के बढ़ते स्तर एवं अपने पैरों पर खड़े होकर चलना सीखने के कारण ही दाम्पत्य सम्बन्धों में बदलाव आना स्वभाविक हो जाता है। वास्तव में वैसे भी समाज में समानता एवं समता महिलाओं के सशक्तिकरण द्वारा ही सम्भव है। आज की नारी को लिंग, प्रकृति, बौद्धिकता, से कमजोर और असहाय

समझा जाए यह वह किसी भी प्रकार से सहन करने के पक्ष में नहीं लेकिन आज भी हमारा समाज रूढ़िवादी सोच और दकियानूसी परंपरा से मुक्त नहीं हो पाया है। इसलिए आज की नारी पुरूष सत्तात्मक समाज से लड़ने के लिए तैयार खड़ी नजर आती है। आज भूमण्डलीकरण एवं प्रगतिशीलता के दौर में स्त्री शोषण के नये–नये आयाम गढ़े जा रहे है ऐसे में स्त्री को और अधिक सचेत रहने की आवश्यकता आ पड़ी है।

नारी की अस्मिता आज भी सुरक्षित नहीं कही जा सकती है तो फिर मेरा मत यही होगा कि स्त्री अधिक सचेत एवं जागरूक रहे जिससे समाज में स्त्री को अपना यथोचित स्थान प्राप्त हो सके और यह तभी संभव है जब नारी उच्च शिक्षित,जागरूक और स्वावलम्बी होने की दशा एवं दिशा का निर्माण स्वंय करे हमारे कथाकार साहित्यकारों ने समाज के विविध क्षेत्रों से विशेष रूप से नारी की ज्वलन्त समकालीन परिवेश से उभरती समस्याओं को उपेक्षित नारियों, अशिक्षित महिलाओं उनकी दीन–हीन दशा पर अनैतिकता, व्यभिचार, बलात्कार, वैश्यावृत्ति जैसी समस्याओं को कहानियों के माध्यम से उनको उचित स्थान दिलाने का प्रयास किया है। पुरातन समय से लेकर आज तक स्त्रियों ने न जाने कितने अत्याचारों को सहन किया है। और ऐसी शोषक नारियां अत्याचार का घूँट पीती रही लेकिन वर्तमान परिवेश में आधुनिक शिक्षा प्रणाली के वढ़ते आयामों में नारी ने पूरी सक्रियता से अपनी अह्म भूमिका का निर्वहन किया है और अपने अधिकारों के लिए निरन्तर लड़ती नजर आ रही है महिला कहानीकारों ने महिलाओं पर होते शोषण एवं अत्याचारों का खुलासा जब आम समाज के सामने पेश किया तब नारी ने अपने अह्म मूल्यों को पहचानकर शिक्षा के विविध आयामों की चोटियों को छूकर दाम्पत्य सम्बन्धों को किस प्रकार से सुनियोचित तरीके के साथ जीया जाए इन मूल्यों को पहचाना है।

भारतीय संविधान ने पुरूष एवं नारी को समान अधिकार दिए हैं इसलिए इन अधिकारों को प्राप्त करने के लिए नारी का शिक्षित होना अति आवश्यक हो गया है। किन्तु हमारा समाज नारी के उन अधिकारों की अवहेलना करता है। जिसका परिणाम दाम्पत्य सम्बधों में देखने को मिलता है।

पुरूष आज भी नारी पर पशुवृत्ति का व्यवहार करने से बाज नहीं आ रहा जिसका परिणाम, बलात्कार, असमय तलाक, नारी उत्पीड़न, सामाजिक दायरों से अवहेलना करने में चूकता नहीं

हिन्दी कहानियों के माध्यम से डॉ. रांगेय राघव ने 'गदल' जैसी कहानी लिखकर दाम्पत्य सम्बन्धों के ऐसे रूप का चित्रण कियाहै जिसमें गदल नामक स्त्री किसी भी प्रकार से विधवा रहकर अपना जीवन बिताना नहीं चाहती वह समाज की चुनौती का सामना करती है और विधवा के कलंक को मिटाकर सधवा जीवन जीने में विश्वास करती है। और समाज की परवाह न करते हुए अपने से कम उम्र के और दूसरी जाति के व्यक्ति से शादी करती है। प्रेमी देवर डोडी के मरने पर सामूहिक भोज का आयोजन करके समाज की चुनौती का सामना करती है। यह सब दाम्पत्य सम्बन्धों के वदलाव की भूमिका अदा करने वाली कहानी है आज के सन्दर्भ में भी भारतीय नारी समाज की बड़ी से बड़ी चुनौतियों को अंजाम दे रही है। जिससे समाज की सोच में भी परिवर्तन देखने को मिलता रहा है।

आज नारी का प्रतिकार स्तर प्रतिशोधात्मक न होकर उसके मूल में सामाजिक न्याय,समानता शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की ही भावना देखने को मिलती है। आज भी नारी को बेचारी, असहाय सम्बोधन दिए जाते है इस विसंगति को मिटाना हमारा दायित्व हो जाता है कि समाज में आज नारी का वर्चस्व तीवृता से बढ़े वह एक अच्छे दाम्पत्य जीवन को जीने में कामयाव हो सके यह पुरूष प्रधान समाज की सोच पर निर्भर करता है कि आधुनिक नारी को किस प्रकार सामंजस्य की डोरी में बांधकर एक नये समाज का निर्माण किया जाए।

वर्तमान परिवेश में यह कहना नितान्त सही होगा कि ''आज के समय में औरतें बदली हैं पुरूष नहीं वदले। प्राचीन से वर्तमान तक दाम्पत्य सम्बन्धों में परिवार व्यवस्था और विवाह संस्था यथावत् है परिवार में बहू की स्थिति आज बहुत ज्यादा नहीं बदली है न मायके में न ससुराल में शिक्षित होने के बावजूद स्त्रियाँ आज भी घरेलू हिंसा को उचित क्यों ठहराती हैं इस विन्दु पर विचार करने की आवश्यकता है।

दाम्पत्य सम्बन्धों को सफल बनााने में स्त्री पुरूष एक गाड़ी के दो पहिए हैं फिर एक पहिए में थोड़ी सी खामी से गााड़ी की गति प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती ठीक ऐसा ही हमारे दाम्पत्य सम्बन्धों का हिसाब है। आज स्त्री विमर्श ने अपने रूप को खो दिया है ऐसा ही आधुनिक सन्दर्भो में देखा जा सकता है। विज्ञापन, प्रचार, फैशन, सौन्दर्यीकरण के नाम पर व्यूटी पार्लर और फैशन डिजाइनर स्त्री के लिए नए आभरण तो बन गये हैं लेकिन इन आयामों ने आधुनिकता और हमारी संस्कृति विचार–धाराओं, रहन–सहन के बीच इतने भटकाव आ गये है कि आज नई पीढ़ी में स्त्री का वर्चस्व उसकी अस्मिता पर दाग लगता जा रहा है। साथ ही ऐसे कार्यो में सक्रियता निभाने से नारी के अन्दर अहम् पैदा करने वाले मूल्यों की वृद्धि हो रही है जिसका परिणाम दाम्पत्य जीवन में देखने को मिलता है। अपने अहम मूल्यों को लेकर स्त्री–पुरूष लड़ते–झगड़ते नजर आते है , यशपाल ने करवा का वृत कहानी में स्त्री स्वाभिमान एवं पुरूष शोषण के रूप को उजागर करके समाज को एक संदेश देने का प्रयास किया है फिर दोनों में ऐसे विचार संचरित हों जिससे एक दूसरे के मूल्यों को पहचानकर अच्छा जीवन जी सकें।

वर्तमान समाज में दाम्पत्य सम्बन्धों का रूप बड़ी तीवृ गति से परिवर्तन हुआ है। आज स्त्री पुरूष के ऊपर निर्भर न रहकर स्वतंत्र रूप से अपने पैरों पर खड़ी नजर आ रही है, शिक्षा, चिकित्सा, राजनीति, तकनीकी ज्ञान जैसे क्षेत्रों में कार्य करना आज नारी के लिए आम बात है जिसका प्रभाव दाम्पत्य सम्बन्धों में दिखाई दे रहा है, वास्तविक रूप से से आज समाज में नारी की शिक्षा पर ध्यान दिया जाए तो देश उन्नति के पथ पर आगे बढ़ सकता है समय के साथ–साथ पुरूषवादी मानसिकता की जड़े आज कमजोर होती जा रही हैं।

सरकारी उपक्रमों के अन्तर्गत कानूनी, चिकित्सा एवं परामर्श सेवायें देने का काम भी आज नारी शक्ति प्रदान करने के लिए किया जा रहा है, इस योजना के लिए टोल फ्री हेल्पलाइन नम्बर 181 है वर्किंग वुमन हॉस्टल योजना का उद्देश्य काम करने वाली महिलाओं के लिए सुरक्षित आवास आसानी से उपलब्ध कराना है जहाँ उनके बच्चों के देखभाल की सुविधा और जरूरत की हर चीज उपलब्ध हो सके यह योजना शहरी –ग्रामीण दोनों स्थानों पर उपलब्ध है, जहाँ महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध है, वर्तमान दौर में महिलाऐं स्वरोजगार के लिए कृषि, बागवानी, खाद्य, प्रसंस्करण, हथकरघा, सिलाई, कढ़ाई, जरी आदि हस्तशिल्प, कमप्यूटर और आईटी कार्यस्थल के लिए सॉफ्ट स्किल और कौशल जैसे कथित अग्रेंजी रत्न और पर्यटन आभूषण जैसे कार्यों के लिए महिलाऐं सेवायें प्रदान कर रही है। महिलाओं के कल्याणकारी कार्यों को सम्पन्न करने के लिए एनजीओं जैसी संस्थाऐं भी कार्य कर रही है, जिससे हम कह सकते है भारतीय समाज में महिलाओं का स्तर काफी हद तक बढ़ा है इसका सीधा प्रभाव व दाम्पत्य जीवन में देखने को मिलता है। वर्तमान मे दाम्पत्य सम्बन्ध सुदृढ़ होने के साथ अर्थ की प्रधानता से दोनों पक्ष पुरूष–स्त्री आत्मनिर्भर होकर नई जीवन शैली में जीवन जीने का आन्नद ले रहे है आधुनिक कहानीकारों ने ऐसे अनेक दाम्पत्य सम्बन्धों का उल्लेख अपने लेखन में किया है। जिससे समाज में एक नई दिशा के साथ स्त्री–पुरूष जीने का आनन्द ले रहे हैं और भैतिकतावादी संस्कृति आज समाज में फैलती जा रही है।

आठवें दशक की जानी मानी लेखिका मृदुला गर्ग दाम्पत्य सम्बन्धों को लेकर कहानी साहित्य रचकर एक मिसाल कायम की है। उन्होने अपनी कहानियों में उल्ल्ेख किया है स्वातंत्रोयत्तर काल में दाम्पत्य जीवन में विघटन की प्रक्रिया प्रवल और उग्र होती जा रही है। आज सामाजिक,भावात्मक, एवं आर्थिक कारणों से पति–पत्नी सम्बन्धों के बीच प्रेम,आत्मीयता का भाव समाप्त होता जा रहा है दाम्पत्य चर्चा का विस्तृत वर्णन मृदुला गर्ग ने चितकोवरा और 'कठगुलाव' उपन्यासों में कहानियों से बढ़कर किया है। मृदुला गर्ग ने ' अवकाश ' 'रूकावट ' 'हरीबिन्दी ' आदि कहानियों में पत्नी को हेय दृष्टि से दिखाया गया है।

दाम्पत्य सम्बन्धों का चित्रण करने वाली कहानीकारों में सुभद्रा ने सोहाग की साड़ी नामक कहानी में पति के स्वप्न को साकार कारने के लिए विदेश में उच्च शिक्षा के लिए भेजती है और जीवन पर्यन्त दुःख और कष्ट सहती नजर आती है। यह वर्तमान दाम्पत्य सम्बन्धों का स्त्री गरिमा का रूप उजागर करता है कि आज की नारी किस प्रकार समझ एवं सूझ से समझौता करती है। जितना त्याग एक स्त्री कर सकती वैसा अन्य नहीं।

डॉ. कमल गुप्ता ने लिखा है – '' श्रृद्धा प्रसाद जी के द्वारा रचित एक अनुपम नारी श्रृष्टि है। वह प्रेमिका,धैर्यशीलता,पवित्रता और मातृत्व की साक्षात प्रतिमूर्ति है।'' 'नैरश्य' कहानी की निरूपमा ऐसी ही अभागिनी स्त्री है वह एक सम्पन्न कुल की वधू है परन्तु कन्या जन्म के कारण सदैव पति की उपेक्षिता बनी रहती है। समाज में कन्या जन्म से ही अशुभ है।''

निष्कर्ष

वर्तमान समाज एवं दाम्पत्य सम्बन्धों को लेकर चित्रा मुद्गल ने स्त्री और पुरूष में मनोविज्ञान को उद्घाटित कर नया समाज बनाने की कल्पना की उन्होने सामान्य गृहणी से लेकर नौकरी पेशा स्त्रियों की भूमिका और चेतना तक फिल्मी विज्ञापन से लेकर पत्रकारिता के अन्याय के प्रतिकार में कड़ी स्त्री भंगिमा के साथ नारी के राजनैतिक धार्मिक और आर्थिक प्रयास उसके अधिकार, कर्तव्य बदलती स्थितियों में नारी की भूमिका और योगदान पर बड़ी समग्रता और संतुलित दृष्टिकोंण से विचार किया है। मृदुला जी द्वारा लिखित कहानी साहित्य का केन्द्रीय स्वर यही है, स्त्री–स्त्री की शत्रु या स्त्री देह मात्र नहीं है। उनके नारी चरित्र अन्याय और शोषण के विरूद्ध नारी जागरण और मुक्ति के संदेशवाहक है। इस प्रकार हम कह सकते है हिन्दी कहानियों में वर्तमान समाज में हो रहे परिवर्तन और दाम्पत्य सम्बन्धों का उल्लेख करना आज की नितान्त आवश्यकता है। जिससे समाज को एक नई दिशा मिल सके । स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानियों में दाम्पत्य सम्बन्धों से सम्बन्धित विविध आयामों की स्थापना नए समाज के निर्माण के लिये करना आज की मूलभूत आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *गुलगन छाबड़ा (2014) शिक्षा ही नारी की असली ताकत /https:/hari.punjabkesari.in/hari/news/article-293465*
2. *केशव सिदार (2017) सशक्त नारी से ही बनेगा सशक्त समाज (https:/keshavsidar.worldpress.com/2017/02/03/first-blogpost/*
3. *चुकते नही सवाल– ' कहानी में स्त्री चेतना, मृदुला गर्ग के लेख से पृष्ठ–53*
4. *टुकड़ा–टुकड़ा आदमी, पृष्ठ – 26 , मृदुला गर्ग*
5. *उर्फ सैम, पृष्ठ 26 , मृदुला गर्ग*
6. *चित्रा मुदगल चर्चित कहानियां सामयिक प्रकाशन वर्ष – 1992*
7. *चित्रा मुद्गल दस प्रतिनिधि कहाँनियां किताब घर प्रकाशन वर्ष–2005*
8. *चित्रा मुद्गल आदि–अनादि सम्पूर्ण कहानियां सामयिक प्रकाशन वर्ष–2007*
9. *प्रसाद,जयशंकर तितली भारतीय गृन्थ निकेतन,नई दिल्ली, पृष्ठ–115*
10. *www.chitramudgal.info*
11. *गुप्तर डॉ. कमल,आधुनिकता के सन्दर्भ में प्रमुख महाकाव्यों में नायिका, दीपक पब्लिशार्य,जालन्धर पृष्ठ–89*
12. *डॉ. नूरजहाँ, पेमचन्द की कहानी में नारी जीवन का चित्रण, हँस प्रकाशन, इलाहबाद, प्रष्ठ–81/4– ज्ञानरंजन पहल पत्रिका जनवरी 2001, पृष्ठ–231*
13. *कितने प्रश्न करूँ ममता कालिया,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली संस्करण 2015,पृ0 कवर पेज से*

14. *चर्चा हमारा, मैत्रेयी पुष्पा सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण 2011, पृ0 43*
15. *बाजार के बीच, बाजार के खिलाफ प्रभा खेतान, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2004 पृ0 227*
16. *डॉ. संजय गर्ग (सं.) स्त्री विमर्श का कालमयी इतिहास सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली संस्करण – 2014*
17. *(पत्रिका) योजना, नारी सशक्तिकरण अंक–9 सितम्बर 2016*
18. *डॉ. रांगेय राघव ' गदल कहानी '*
19. *पत्रिका (योजना) नारी सशक्तिकरण अंक–9 सितम्बर 2016*
20. *यशपाल करना का वृत्त कहानी*
21. *मैत्रेयी पुष्पा विजन, 2002 पृ0 69*
22. *समकालीन कहानी : युगवोध का संदर्भ,पृष्ठ–161 डॉ. पुष्पपाल सिंह*